आर्ट एण्ड कल्चर विंग

गाइड

BRAHMA KUMARIS

www.artandculturewing.com

कलाकारों केलिए निम्नलिखित कार्यक्रम

१. कलाकारों का स्नेह-मिलन (गेट टू गेदर)

२. कलाकार संगोष्ठी (सेमीनार)

३. आध्यात्मिक सांस्कृतिक कार्यक्रम (स्पीरीच्युअल कल्चरल प्रोग्राम)

४. डिवाइन डायलॉग एण्ड रिट्रीट

५. आध्यात्मिक संगीत संध्या

६. डिवाइन कल्चरल नाईट

७. कवि संगोष्ठी

८. कवि सम्मेलन

१०. परमात्म अनुभूति संध्या

११. मूल्यनिष्ठ कला एवं संस्कृति सम्मेलन (कॉन्फ्रेन्स)

१२. संस्कृति एवं कला महोत्सव (फेस्टीवल)

१३. संस्कार मिलन कार्यशाला (वर्कशॉप)

१४. नवयुग स्वर्णिम चित्र-कला प्रदर्शनी (एक्जीबीशेन)

१५. स्वर्णिम संस्कृति मेला (फेयर)

१६. स्वर्णिम संस्कृति कला महोत्सव (फेस्टीवल)

१७. लोक नृत्य प्रतियोगिता (फोक डांस कॉम्पीटेशन)

१८. लोक नृत्य महोत्सव (फोक डांस फेस्टीवल)

१९. आध्यात्मिक नुक्कड़ नाटक (स्पीरीच्युअल स्ट्रीट प्ले)

२०. स्पीरीच्युअल कार्नीवल (आध्यात्मिक आनन्दोत्सव)

आर्ट एण्ड कल्चर विंग की अधिक जानकारी हमारी वेब साइट मे उपलब्ध है।

www.artandculturewing.com

संस्कृति एवं कला प्रभाग से सम्बन्धित विषय शीर्षक

List of topics

1 – Golden Culture for golden world.

2 – The Culture of Purity, Peace and Happiness.

3 - New Culture for New world.

4 – The Culture for Oneness

5 – Divine Culture for Divine Bharat

6 – Harbinger of Harmony and Happiness.

7 – Towards Golden Bharat.

8 – The future of CULTURE.

9 – God's plan for Golden Culture.

१. स्वर्णिम संस्कृति से स्वर्णिम संसार

२. साहित्य, संस्कृति और संस्कार

३. कलाकार अर्थात् कल को आकार देनेवाले

४. आध्यात्मिकता से कला में निखार

५. भारतीय संस्कृति की दशा और दिशा

६. कलाकारों की नई सोच

७. कला और आध्यात्मिकता का सन्तुलन

८. कला में परमात्म शक्ति भरने की विधि

९. आध्यात्मिक शक्ति का कला पर प्रभाव

१०. कला की तीन अवस्था - सतो, रजो, तमो

११. कल का भारत – कल की संस्कृति

१२. कल, काल और कला

कला एवं संस्कृति प्रभाग का कार्य

- कला तथा कला को उचित सम्मान दिलाने के लिए महासम्मेलनों, कार्यशालाओं, वाद-परिसंवाद, समूह परिचर्चा, राजयोग शिविर इत्यादि का आयोजन करना
- कलाकारो को एक मंच पर एकत्रित करके उनकी सामूहिक ऊर्जा काउपयोग समाज के सुन्दर कल के आकार को देने के लिए करना।
- समय प्रति समय मूल्यनिष्ठ कला, संगीत एवं संस्कृति के विकास के लिए विभिन्न अभियान चलाकर कलाकारों का एक साझा मंच बनाकर उन्हें नई सभ्यता एवं संस्कृति का अग्रदूत बनाना ।
- कला एवं संस्कृति के क्षेत्र से जुड़े लोगों को जीवन में आध्यात्मिक शिक्षा को ग्रहण करने और प्रतिदिन राजयोग का अभ्यास करने के लिए प्रेरित करना।
- कला को अश्लीलता एवं व्यावसायिक मानसिकता से मुक्त बनाकर लोक-कल्याणकारी बनाने के लिए सम्मेलनों एवं गोष्ठियों का प्रति वर्ष मुख्यालय में आयोजन करना।
- अधिक सेअधिक कलाकारों, संगीतकारों, साहित्यकारों, गायकों को कला एवं संस्कृति प्रभाग से जोड़कर राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय स्तर पर कला को उचित सम्मान दिलाने हेतु कार्यक्रम आयोजित करना।
- कला से सम्बन्धित लोगों को सम्मानित करना जिससे कलाकारों में श्रेष्ठ स्वमान की भावना जागृत हो सके।
- लोगों को आध्यात्मिकता से जोड़ने के लिए समय प्रति सम्पूर्ण भारत के विभिन्न स्थानों पर हिन्दी भाषा तथा क्षेत्रीय भाषाओं में भजन संध्या इत्यादि का आयोजन करना।
- कलाकारों को राजयोग की महान शक्ति से परिचित कराकर उनके व्यक्तिगत जीवन की श्रेष्ठ कलाओं का विकास करना।
- विभिन्न संगीत विश्व विद्यालयों, संगीत अकाटमियों, कला प्रशिक्षण विद्यालयों से सम्पर्क-सम्बन्ध स्थापित करके उनके पाठ्यक्रम में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयत्न करना।
- कला और संगीत में व्यावसायिक मानसिकता के साथ मानवीय मूल्यों का सन्तुलन स्थापित करने लिए राजयोग एवं आध्यात्मिक शिक्षा को माध्यम बनाने के लिए इससे सम्बन्धित लोगों को प्रोत्साहित करना।

कला एवं संस्कृति प्रभाग का लक्ष एवं उद्देश्य

- कला एवं संस्कृति प्रभाग का मुख्य उद्देश्य कला के विविध विधाओं से संबन्धित कलाकारों मे आध्यात्मिकता का संचार करना।
- कलाकारो का यह परिचय कराना कि सर्वश्रेष्ठ कला मनुष्य में श्रेष्ठ मानवीय गुणों का विकास करती है।
- कलाकारों के व्यक्तिगत जीवन में उच्चादर्शों का विकास करना।
- कलाकारों के जीवन को व्यसनमुक्त, तनावमुक्त बनाकर उनकी कार्यक्षमता में वृध्दि करना।
- कला की बढ़ती व्यावसायिक मानसिकता को आध्यात्मिक शक्ति और राजयोग से परिवर्तित कर लोक कल्याणकारी और मानवीय मूल्यों के विकास का संवाहक करना।
- कला कोआध्यात्मिक और मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाना।
- कला को मानवता की सेवा में सहयोगी बनाना।
- संस्कृति में आध्यात्मिकता का संचार करके लोगों के गिरते नैतिक स्तर को ऊँचा उठाना।
- कला एवं संगीत द्वारा लोगों को तनावमुक्त तथा सौन्दर्यनुभूति क्षमता का विकास करना।
- कलाकारों को नई सतयुगी दुनिया के आदर्शों से परिचित कराकर एक नई सभ्यता के नवनिर्माण का मार्गदर्शक बनाना।
- प्राचीन गौरवशाली भारतीय संस्कृति-सभ्यता एवं कलाओं से नई पीढ़ी को जोड़कर उनके मानसिक भटकाव को रोककर चरित्र निर्माण करना।
- कला को समाज मे सम्मानजनक स्थान दिलाने का प्रयत्न करना।
- कला संगीत एवं संस्कृति को परमात्म-अनुभूति का सहज और सशक्त माध्यम बनाकर लोगों में आध्यात्मिक जागृति लाना।
- कवि, लेखक एवं साहित्य की अन्य विधाओं से जुड़े साहित्यकारों को मूल्यनिष्ठ, प्रेरक एव स्वर्णिम सभ्यता के नवनिर्माण में सहायक लेखन के प्रति जागृत करना।
- कला एवं संस्कृति को सुखमय संसार का नव-निर्माण के प्रभावशाली माध्यम के रुप में विकसित करने के लिए इस क्षेत्र प्रशिक्षण एवं अनुसंधान को प्रोत्साहन देना।

कला और संस्कृति प्रभाग का क्षेत्र

कला और संस्कृति प्रभाग ऐसे व्यक्तियों की सेवा करता है, जो आत्माएं कला और संस्कृति क्षेत्र से संबंध रखते है।

कला :-

कला की परिभाषा बहुत व्यापक है किन्तु सार रुप में इसे इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है - मानव जीवन में सच्चाआनंद निर्माण करने हेतु जो भिन्न प्रकार के कार्याकलाप सृजनात्मक क्षमता लाने में सहायक होते है वे क्रियाएँ ही कला कहलाती हैं।

संस्कृति -

संस्कृति उन मानवी कर्मो की ओर निर्देश करती है, जो कर्म श्रेष्ठ संस्कारों परआधारित होते हैा तथा समाज के विशेष अंगों को धर्म, महत्त्वपूर्ण घटनाएँ, भौगोलिक वातावरण, समय आदि बिंदुओ के द्वारा समाहित करते है।

वर्गीकरण

१. ललित कलाएँ - फाइन आर्टस्

अ) क्षेत्र- स्केचिंग, ड्राइंग-चित्रकला, रंगकर्म (जल व तेल से) बड़े तैलचित्र, स्थिर चित्रण, लॅण्ड स्केप, कार्टून - व्यंगचित्र, शिल्प, रंगोली, ॲबस्टॅक्ट चित्र, आधुनिक कला, (मॉडर्न आर्ट), कॅलीग्राफी (लेखनकला)

ब) कलाकार

१. उपरिलिखित चित्रकर्म का व्यवसाय करनेवाले

२.निर्देशक, प्रोफेसर्स, कलाक्षेत्र के स्कूल, कॉलेज,संस्थाओं के शिक्षक व विद्यार्थी

३. लेखक और पुस्तकें, अखबार, पत्रिकाएं आदि मे जिनके ललित कला विषयक लेख प्रकाशित होते हैं व्यक्तिविशेष।

४. राष्ट्रीय, आन्तरराष्ट्रीय और प्रांत के स्तर के कलाकार

२) रंगभूमि आदि पर प्रत्यक्ष होने वाली कलाएं पर्फामिंग आर्टस

१. रंगभूमिपर

अ) क्षेत्र

१. गायन-एक व्यक्तिद्वारा या समूह रुप से

२. संगीत- गायन या वादन शास्त्रीय, उप शास्त्रीय, लोकसंगीत

३. नृत्य-शास्त्रीय,उपशास्त्रीय व लोकसंगीत

४. पॉप संगीत

५. नाटक -तीन अंकों का नाटक, एकांकिका, पथनाटय, नुक्कड नाटक

६. जादू के प्रयोग

ब) कलाकार

१. उपरिलिखित कलाओं के क्षेज मे व्यवसाय करनेवाले

२. निर्देशक, प्रोफेसर्स, शिक्षक, गुरु,उस्ताद व कॉलेज, संस्थाएँ, स्कूल के शिक्षक (जो संस्थाएँ कलाओं का प्रशिक्षण देती है)

३. लेखक तथा पुस्तकों, अखबार व पत्रिकाओं आदि मे जिनके लेख प्रकाशित होते हैं ऐसे व्यक्ति विशेष।

४. सजसंचालन करनेवाले, सूचना प्रसारण करनेवाले, रंगमंच के संचालक एवं निर्देशक

५. सरकारी, निमसरकारी संस्थाएँ तथा गैर सरकारी संस्थाएँ जो कला और संस्कृति को प्रोत्साहन देती है।

२) रंगमंच की पृष्ठभूमि में काम करनेवाले (नेपथ्य कलाकार)

अ) क्षेत्र

१. परदे के पीछे (प्लेबैक) गानेवाले-एक कलाकार या समूहगीत गानेवाले।

२. नृत्य निर्देशक व नृत्यसंचालक

३. संगीत संयोजक

४. वादकवृंद

५. संगीत/रेकार्ड करनेवाले

६. कैमरामैन, फोटोग्राफर्स

७. मेकअप मैन (रुप सज्जाकार)

८. निर्माता

९. फिल्म के निर्देशक, टीवीमालिकाएं, नाटक, डाक्युमेंटरीज् एण्ड फिल्म्स के संचालक

ब) कलाकार

१. उपरिलिखित कलाओं के क्षेत्र मे व्यवसाय करनेवाले

२. डायरेक्टर्स प्रोफेसर्स उपरिनिर्दिष्ट कलाओं में प्रशिक्षण देनेवाली संस्थाओ, स्कूलों, कॉलेजों के शिक्षक, गुरु उस्ताद व विद्यार्थी

३. लेखक व उपरिनिर्दिष्ट क्षेत्र के बारे में लखे प्रकाशित करनेवाले

४. विश्वकर्मा समूह जिनमें घर, मकानों में लकडी का काम करनेवाले मुख्य कारीगर,ग्रिलडिजाइनर्स और फेब्रिकेअर्स

५. सृजनात्मक कलाएं

अ) क्षेत्र १. पुस्तक-लेखन २. नाटकलेखन एवं रचना

३. कवि ४. संगीत संयोजक

ब) कलाकार १. लेखक, कवि व साहित्यिक व्यक्तियों का संगठन राज्यस्तरीय, राष्ट्रस्तरीय संस्थाओ के प्रमुख

२. उपानिर्दिष्ट क्षेत्र से जुडी पुस्तकों के प्रकाशक

३. गद्य साहित्य व काव्य दोनों के टीकाकार, रसग्रहण करनेवाले विशेष व्यक्ति

५) सांसकृतिक क्षेत्र-

अ) विभाग - १. संस्कृति के विषय में अभ्यास

२. संस्कृति को प्रोत्साहन देना

३. सांस्कृतिक कार्यो में खोज, अध्ययन

ब) कलाकार

१. राष्ट्रीय व प्रांतीय स्तर के सांस्कृतिक प्रभागों के डायरेक्टर्स व विशेष कार्यकारी अधिकारी गण

२. संस्कृति का विकास करने में लगे हुग संगठनों एवं संस्थाओं पदाधिकारी

३. सांस्कृतिक आदान प्रदान करनेवाली (जैसे कि डंडोकोरियन, इंडोचायनीज्,
इंडोरशियन आदि संस्थाएँ व विशेष प्रभाग)

नोट :- १. उपरिलिखित विवरण केवल संकेत रुप में है ।

२. इस सेवा का उद्देश्य मुख्य रुप से कर्मयोग को बढ़ावा देने के लिए है ।

४) कला व सांस्कृतिक कार्यक्रमों को बढ़ावा देनेवाली कार्यकारी संस्थाएं, तथा उनको तांत्रिक सहयोग देनवाली संघटनाएँ

५) दूरदर्शन केंद्र, आकाशवाणी केंद्र तथा टी.वी. व फिल्म उद्योग के डायरेक्टर्स तथा ऑफिसर्स

६) संग्रहालयों के संचालक तथा अधिकारी वर्ग

३.) जीवनोपयोगी कलाएं ॲप्लाइड आर्ट्स (अनुप्रयुक्त कला)

अ) क्षेत्र

१.व्यावसायिक कला २) पोस्टर्स ३) विज्ञापन ४) फोटोग्राफी

५) वीडियोग्राफी ६) शिल्प (स्थापत्य) ७) नगरनियोजन-रचना योजना

८) संगणकीय डिजाईन ९. शहरी व ग्रामीण रचना-योजना

१०) शहर व प्रांतीय रचना -योजना ११) नगर-डिजाइन १२) लैंडस्केप स्थापत्य

१३) ब्यूटी पार्लर्स १४) इंटिरिअर डेकोरेशन-डिजाइन १५) फैशन डिजाइन

१६) फर्निचर डिजाइनिंग १७) टेक्स्टाइल डिजाइनिंग १८) ज्वैलरी डिजाइनिंग

१९) डाय मेकिंग २०) फुलों से सजावट २१) सोंदर्य शास्त्र

२२) हयुमन सेटलमेन्ट्सका शास्त्र २३) हैबिटाट २४) बुनाई, हस्तकला

२५) कढाई एम्ब्रॉयडरी २६) कॉस्मेटिक डेंटिस्ट्री २७) हस्तकला

२८) फॉल्स सीलिंग डिजाइनिंग २९) लाइट डेकोरेशन-प्रकाश विद्युत सजावट

ब) कलाकार

१. उपरिनिर्दिष्ट कलाओं केक्षेत्र में व्यवसाय करनेवाले

२. डायरेक्टर्स, प्रोफेसर्स, टीचर्स, उपरिनिर्दिष्ट कलाओं में प्रशिक्षण देनेवाली संस्थाओं, स्कूलों, कॉलेजों के शिक्षक, गुरु, उस्ताद व विद्यार्थी

३. लेखक व उपरि निर्दिष्ट क्षेत्र के बारे में लेख प्रकाशित करनेवाले

४. जीवनोपयोगी कलाओं को बढावा देनेवाली कार्यकारी संस्थाओं संगठनों, तकनीकी एवं व्यावसायिक समितियों के प्रमुख व्यक्ति ।

सांस्कृतिक प्रभाग से सम्बन्धित साम्रगी (फोल्डर्स, मैगजीन्स, सर्कुलर्स आदि) जो भी आपको प्राप्त होते है उनकी विशेष फाइल बनायें ताकि समय पर उनका सदुपयोग किया जा सके ।

कला सांस्कृति प्रभाग के सदस्यों प्रति सांस्कृतिक प्रभाग के सदस्य अपनी सदस्यता या नवीनीकरण अवश्य करा लें । दो वर्ष तक नवीनीकरण नहीं कराने पर सदस्यता रद्द की जा सकती है ।

कला एवं सस्कृती प्रभाग का आजीवन सदस्य अवश्य बने, इस विद्यालय का कोई भी विद्यार्थी आजीवन सदस्य बन सकता है । इस के लिए पंजीकरण फार्म हमारे वेब साईट में उपलब्ध है ।

www.artandculturewing.com

विश्वकर्मा आर्टस की सेवा के लिए, विश्व कर्मा आर्टसके माध्यम से हम निम्नलिखित कारीगरों की सेवा कर सकते हैं:-

१. आर्कीटेक एण्ड इन्टरियर डिजाइनर्स

२. बिल्डर, मैकानिक इत्यादि

३. कारपेन्टर्स, कारविंग के कारीगर

४. टेलर, ड्रेस डिजाइनर्स

५. मूर्तिकला, स्टैच्यू बनाने वाले इत्यादि

६. ज्वेलर्स, डायमण्ड के कारीगर

७. पाक कला (भोजन बनाने की कला)

८. स्थापत्थ्य कला व शिल्प कला

९. पेन्टर, प्लास्टर पेरिस, प्लम्बर्स इत्यादि

१०. हस्त कला व खिलौने बनाने वाले इत्यादि

११ .इलेक्ट्रिशियन, लाइट डेकोरेटर्स

१२. शू मेकर

१३. वास्तु कला और ज्योतिष कला

१४.फूल (फॉवर) डेकोरेटर्स

❇ विश्वकर्मा के अन्तर्गत कारीगरों की सेवा हम तीन ग्रुप में कर सकते हैं। ❇

१. कारीगर ग्रुप जो स्वय अपने हाथों से कार्य करते हैं

२. सुपरवाईजर, कॉन्ट्रेक्टर ग्रुप, जो कार्य करवाने की क्षमता रखते हैं। जिसके पास दस से पन्द्रह से अधिक कारीगर कार्य करते हैं।

३. मर्चेण्ट व मटेरियल सप्लायर ग्रुप,जो सुपरवाइजर, कॉन्ट्रेक्टर इत्यादि को मटेरियल सप्लाई करते है। जैसे फेवीकॉल, किटप्लाई, विमल ड्रेस डिसाइनर्स इत्यादि जो कारीगरों से जुड़े रहते है, वह मटेरियल सप्लाई करते हैं व अपने प्रोडेक्शन के लिए एडवरटाइज करते हैं।

-: कार्यक्रम कैसे करें :-

कार्यक्रम करने के लिए अलग-अलग कारीगरों के ५०-५० के ग्रुप बनाकर उनकी अलग-अलग सेवा कर सकते हैं। जैसे ५०ज्वैलर्स, ५० कारपेन्टर या सभी प्रकार के कारीगरों को मिलाकर इकट्ठा संगठित रुप में कार्यक्रम रख सकते हैं, और उसमें वी.आई.पीज के रुप में, स्पीकर के रुप में कारीगरों से जुड़े मर्चेण्ट व मटेरियल सप्लायर कम्पनी के मैनेजर इत्यादि को बुला सकते हैं। कार्यक्रम का नाम ऐसा रखें जिससे कारीगर एकत्रित हो सकें, जैसे -

१. विश्वकर्मा स्नेह मिलन

२. कला और आध्यात्मिकता का सन्तुलन

३. आध्यत्मिकता द्वारा कला में निखार

कारीगरों के कार्यक्रम में नीचे दिये टॉपिक्स पर स्पीच दें अथवा कारीगरों से सम्बन्धित टॉपिक्स बनाकर स्पीच दें।

१. विश्वकर्मा जीवन दर्शन - ब्रम्हा बाबा

२. योग द्वारा कर्म में कुशलता

३. कला में परमात्म शक्ति भरने की विधि

४. आध्यात्मिक शक्ति का कला पर प्रभाव

५. कला की तीन अवस्था - सतो, रजो, तमो

६ व्यसन मुक्त कारीगर

७ हमारा सकारात्मक जीवन

८. आत्मिक स्मृति द्वारा कर्म करने की विधि और सिध्दि

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क - (आर्ट एण्ड कल्चर विंग ऑफिस -शांतिवन)

www.artandculturewing.com